अंक : 24

सहयोग शुल्क : रु.1

दिसम्बर : 2018

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

दिव्यांग सेतु

संपादक : **- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई**

> **दिव्यांग एक सोच है, एक ताकत है, एक विचार है**
>
> - नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

> **श्रेष्ठ होना कोई कार्य नही बल्कि हमारी आदत है जिन्हें हम बार बार करते है**
>
> - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

ॐकार सम्प्रदाय
ॐकार सम्प्रदाय

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

कोहरे का घूंघट,
हौले से उतार कर ।
चम्पई फूलों से,
रूप का सिंगार कर ।।
अम्बर ने प्यार से,
धरती को जब छुआ ।
गुलाबी ठंडक लिए,
महीना दिसम्बर हुआ ।।

- पवनकुमार मिश्र

जैसे सर्दी के मौसम में जब रातभर ओस जम जाती है, और सुबह सूरज की किरण पड़ते ही पानी की बूंद जैसी चमकने लगती है, वैसे ही जीवन में भी ऐसी किरणें आती है। हम शायद कभी-कभी उन लम्हों को समझने में देर कर देते है और मौका हाथ से निकल जाता है। जीवन में ऐसे मौके बहुत ही कम आते है जब आपका कोई हाथ थामे और जीवन में कुछ अनोखा रास्ता प्रदान करें। जीवन अमूल्य है, उसे पूरी तरह जियें, अंतिम सांस तक।

दिव्यांग सेतु के दो वर्ष की पूर्णाहुति पर हम आप सबको बधाई देते है। ऐसे ही हमें प्यार देते रहें, हम आपके लिए ढेर सारी प्रेरणात्मक बातें लेकर हर महीने आते रहेंगे।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

दिसम्बर : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 12

प्रेरणास्त्रोत और संपादक
संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक
मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र
सेवा समर्पण फाउन्डेशन
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)
Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad
००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,
नया विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००९
मो. 99749 55365, 9974955125

मुद्रक
प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.
आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6
079 26405200

धोनी ने अपने इस दिव्यांग फैन से मिलकर उसका और करोड़ों दिल जीते

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और फिलहाल वनडे टीम में विकेटकीपर बल्लेबाज की भूमिका निभा रहे महेंद्र सिंह धोनी अपने फैंस को कम ही निराश करते हैं। भारत और वेस्टइंडीज के बीच जारी वनडे सीरीज के पांचवें वनडे मैच के लिए केरल के तिरुवनंतपुरम में महेंद्र सिंह धोनी ने अपने एक दिव्यांग फैन का दिन खास बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। धोनी का ये खास फैन खासतौर पर माही से मिलने पहुंचा था और इस दिग्गज क्रिकेटर ने उसे निराश नहीं किया।

धोनी जब होटल से तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम जा रहे थे तब उनकी नजर एक दिव्यांग फैन पर पड़ी जो धोनी से मिलना चाहता था और उनका इंतजार कर रहा था। धोनी ने भी तुरंत इस फैन की इच्छा का सम्मान किया और उसके पास जा पहुंचे। धोनी ने इस फैन के साथ तस्वीरें खिंचवाई और कुछ मिनट बातचीत भी की। माही के इस अंदाज को देखकर धोनी का ये फैन भी भावुक हो गया और धोनी का हाथ पकड़कर चूम लिया।

मोदी सरकार ने कोर्ट में कहा- “अब दिव्यांग भी कर सकेंगे हज यात्रा”

चीफ जस्टिस राजेंद्र मेनन की अध्यक्षता वाली बेंच को केंद्र सरकार ने ये सूचना दी।

केंद्र सरकार की ओर से वकील अजय दिगपाल ने कहा कि हज कमेटी ऑफ इंडिया ने सर्वसम्मति से फैसला लिया है कि विशेष जरुरतमंद लोगों को भी हज के लिए सामान्य कोटे से भेजा जा सकता है। उनके साथ उनका कोई परिजन भी जा सकता है। हालांकि उन्होंने कहा कि इस बदलाव में गंभीर रुप से बीमार लोगों को हज पर भेजने का प्रावधान नहीं है।

ये आदेश 2018-2022 तक की है यात्रा के लिए

याचिका वकील गौरव बंसल ने दायर किया था। याचिका में कहा गया है कि केंद्र सरकार की नई हज नीति के मुताबिक शारीरिक और मानसिक रूप से दिव्यांग लोगों को हज यात्रा पर मक्का जाने पर रोक लगा दी गई थी। अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय द्वारा गठित कमेटी की रिपोर्ट के बाद केंद्र सरकार ने शारीरिक और मानसिक रूप से दिव्यांग लोगों को हज का आवेदन करने पर रोक लगा दी थी। ये आदेश 2018 से लेकर 2022 तक की है यात्रा के लिए है। याचिका में कहा गया था कि केंद्र सरकार की ये हज नीति संविधान की धारा 14, 21 और 25 के तहत बराबरी और धार्मिक आजादी के अधिकारों का उल्लंघन करती है।

अपराजिता: मजबूर और बेसहारों का सहारा बनी दिव्यांग पायल, सीएम भी कर चुके हैं सम्मानित

घर की हालत माली। दिव्यांगता की वजह से पढाई बीच में ही छूट गई। लेकिन इसके बाद शामली की पायल बेसहाराओं का सहारा बनकर खडी हैं। जो बच्चे तंगी के कारण स्कूल नहीं जा पाते और जो महिलाएं आज भी घरेलू हिंसा की शिकार हैं उनके लिए प्रेरणा का काम कर रही पायल की इसी दिलेरी के कारण राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव भी पायल को सम्मानित कर चुके हैं।

गरीब लोगों के लिए संघर्ष करने वाली लडकी को मर्दानी न कहें तो क्या। कुछ ऐसी ही कहावत को सच साबित कर रही है लतीफगढ गांव निवासी पायल कश्यप। एक पैर से दिव्यांग है। पायल कश्यप के माता-पिता का देहांत हो चुका है। परिवार की आर्थिक स्थिति खराब है और बावजूद इसके पायल के कंधों पर अपने सहित तीन अन्य भाई-बहनों की जिम्मेदारी भी है। इन सबके बावजूद पायल ने साल 2014 में युवा एकता उत्थान समिति का गठन किया।

इस संगठन के जरिए पायल जहां पैसे के अभाव में स्कूल से दूर बच्चों को शिक्षित करने का काम करती है, वहीं उत्पीडन की शिकार महिलाओं को जागरूक करने का भी। इसी कार्य के चलते साल 2015 की 27 अगस्त को तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और उनकी पत्नी डिम्पल यादव ने पायल कश्यप को महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास के कार्यों को लेकर सम्मानित भी किया था।

* घर के आसपास ही बच्चों को पढाती है पायल

आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण पायल के घर में बच्चों को पढाने की बेहतर व्यवस्था नहीं है। इसलिए वह आसपास के घर में बच्चों की क्लास चलाकर उन्हें पढाने का काम करती है।

* जनवरी 2011 में हुआ था पिता का निधन

पायल कश्यप की मां का निधन 2011 में हो गया था। इसी साल 14 जनवरी को उनके पिता श्यामलाल का भी निधन हो गया। ऐसे में पायल के परिवार की स्थिति और गंभीर हो गई, लेकिन मर्दानी लडकी ने इस कमजोरी को भी अपना हथियार बनाया और अपने मिशन में बढती चली गई।

* बीच में छूट गई पढाई

पायल के परिवार की आार्थिक स्थिति का आलम ये है कि पैसे न होने के कारण उन्हें देहरादून में मास्टर्स ऑफ जर्नलिज्म की पढाई बीच में ही छोड देनी पडी। लेकिन बावजूद इसके भी पायल ने हार नहीं मानी।

* आठ भाई-बहन

पायल के पिता के कुल आठ संतान हैं। इनमें से बड़े चार भाईयों की शादी हो चुकी है, जो अपने परिवार के साथ रहते हैं। हालांकि, वह पायल के परिवार को चलाने में थोडी बहुत मदद कर देते हैं, लेकिन उनकी स्वयं की भी हालत ठीक न होने के कारण ज्यादा मदद नहीं दे पाते।

पैरा एशियन गेम्स, पारुल परमार को स्वर्ण पदक

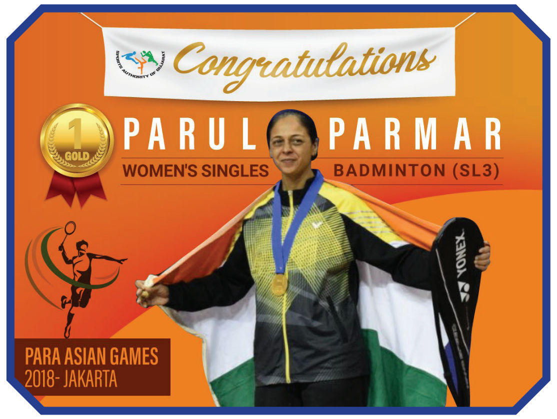
Congratulations
SPORTS AUTHORITY OF GUJARAT
1
GOLD
PARUL PARMAR
WOMEN'S SINGLES
BADMINTON (SL3)
PARA ASIAN GAMES
2018- JAKARTA
YONEX

पैरा-एशियाई खेल : 45 वर्षीया पारुल ने जीता स्वर्ण

INDIA
3rd ASIAN PARA GAMES
INDONESIA

ईन्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में तीसरी एशियन पैरा गेम्स का आयोजन किया गया था। गांधीनगर की पारुल परमार ने बेडमिन्टन में सिंगल्स और डबल्स में गोल्ड मैडल जीतकर भारत नाम रोशन किया। जो गांधीनगर के लिए गौरव की बात है। पिछले साल भी बेडमिन्टन वर्ल्ड फेडरेशन द्वारा उल्सान, साऊथ कोरिया में आयोजित वर्ल्ड पैरा बेडमिन्टन में पारुल परमार ने बेस्ट परफोर्मेंस के साथ भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कर के सिंगल्स और डबल्स में गोल्ड मैडल जीतकर गौरव प्राप्त किया था। उस चेम्पियनशिप में ४१ देश के दिव्यांग खिलाडीयों ने हिस्सा लिया था। भारत की और से २४ खिलाड़ी थे। जिसमें अभी स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ़ इण्डिया में कोच के पद पर कार्यान्वित पारुल परमार ने गोल्ड मैडल जीता था।

जकार्ता में हुई एशियन पैरा गेम्स में चीन-कोरिया की मजबूत प्रतियोगी होने के बावजूद पारुल परमार ने सिंगल्स और डबल्स में गोल्ड मैडल जीतकर भारत का झंडा गाड़ दिया। इस सिध्धि के साथ पारुल परमार ने कुल मिलाकर २६ गोल्ड, ६ सिल्वर और ६ ब्रोंझ मैडल राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कक्षा में हांसिल कर दिए। पारुल परमार पैरा बेडमिन्टन में २००२ से नं.१ होने के साथ पिछले आठ साल से वर्ल्ड में भी प्रथम रेंकिंग पर है। अनुभव के साथ उनकें खेल में भी उतरोत्तर सुधार आया है।

पारुल परमार के बाएँ पैर में पोलियों से दिव्यांगता हुई है। तीन वर्ष की आयु में डोक्टर ने उसके पिता दलसुखभाई को कायमी कसरत की सूचना दी। इस कसरत के आशय से शुरू किए गए बेडमिन्टन के खेल में जब १० साल से कम आयु की प्रतियोगिता में शारीरिक सक्षम खिलाडीयों को हरा कर स्टेट चेम्पियनशिप जीती उसके बाद उसने पीछे मुड़ कर नहीँ देखा। उन्होंने २००२ से पैरा बेडमिन्टन में खेलना शुरू किया और काफ़ी साल तक भारत के चेम्पियन रहें। भारत में आयोजित एशियन गेम्स में सिंगल्स, डबल्स और मिक्स-डबल्स में तीन गोल्ड मैडल जीतकर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। भारत से बाहर पहलीबार इज़राइल जाने का हुआ तब भारत से सिर्फ़ वह एकमात्र प्रतिनिधि थी। उसमें भी बेडमिन्टन में भी एकमात्र होने के कारण पुरुषो के साथ खेल में भी ब्रोंझ मैडल जीता।

चीन और इंडोनेशिया जैसे देश में दिव्यांग खिलाडीयों के लिए नई टेकनिक, उपकरण और कोच की व्यवस्था अलग से होती है, पर पारुल को खुद ही संघर्ष करना पड़ा। पारुल ने मैदान में और मैदान के बाहर सख्त महेनत कर के बेडमिन्टन क्वीन का बिरुद हांसिल किया है। २०२० में टोकियो में होने वाले ओलिंपिक में पैरा बेडमिन्टन को समाविष्ट किया गया है. पारुल की इच्छा है की सिंगल्स, डबल्स और मिक्ष-डबल्स में भारत गोल्ड मैडल जीते, जो असंभव नहीं है।

एच. रामकृष्णन: पत्रकार और संगीतज्ञ

विकलांगता शरीर में हो सकती है मन में नहीं होनी चाहिए। अगर यदि हमारे मन में विकलांगता नहीं है शरीर में है तो हम अपने आत्मबल से संघर्ष के रास्ते असंभव को भी संभव कर सकते हैं। भारत में ही नहीं विश्व में कई ऐसी महान हस्तियां है। जिन्होंने अपने संघर्ष से अपनी विकलांगता को पछाड़ते हुए विश्व पटल पर अपना नाम रोशन किया है। आज आपके सामने एक ऐसी ही महान हस्ती एच रामाकृष्णन की सफलता की कहानी हम पेश करने जा रहे है।

ढाई साल की उम्र में रामाकृष्णन को दोनों पैरों में पोलियो हो गया था। इसकी वजह से उन्हें स्कूल में दाखिले से लेकर सामान्य जॉब तक के लिए संघर्ष करना पड़ा। आखिरकार उन्हें पत्रकारिता में नौकरी मिली जिसमें उन्होंने 40 साल काम किया। आज, रामाकृष्णन एस एस म्यूजिक टीवी चैनल के सीईओ हैं और खुद भी एक संगीतकार हैं।

एच रामकृष्णन का जन्म 1941 को, केरल के त्रिवेन्द्रम में हुआ था पिता हरिहर अय्यर और माता विजयलक्ष्मी थी।

एक पत्रकार के रूप में 40 से अधिक वर्षों का अनुभव है उन्होंने राज्य द्वारा संचालित मीडिया दूरदर्शन, (अखिल भारतीय रेडियो), प्रेस सूचना ब्यूरो और विभिन्न माध्यमों में विज्ञापन निदेशालय और दृश्य प्रचार में काम किया है। तमिलनाडु के लोग,अभी भी उन्हें एक बहुत ही प्रसिद्ध न्यूज़कास्टर के रूप में याद करते हैं, जिनकी अपनी एक अलग आवाज ने सफलता की मंजिल पर अपनी पहचान बना ली थी।

ढाई साल की उम्र में पोलियो से प्रभावित एच रामकृष्णन को जीवन में हर कदम पर संघर्ष का सामना करना पड़ा। यहां तक कि जब उन्हें विद्यालय में जाना पड़ता था, तब उन्हें स्थानीय स्कूल में प्रवेश से वंचित होना पड़ा था और अपने नाना के द्वारा एक अलग शहर में एक अलग स्कूल ले जाया गया था। यूपीसीसी परीक्षा पास करने के बाद जब रामकृष्णन न्यूज़ रीडर, अनुवादक या रिपोर्टर के रूप में कर्तव्य में शामिल हो गए, लेकिन उनके बाधा के कारण उन्हें पद के लिए स्वीकार नहीं किया गया (उनके दोनों पैरों में पोलियो था)।

85 प्रतिशत विकलांगता होने के बावजूद, रामकृष्णन एक साइड कार स्कूटर मिल जाने तक बसों के चारों ओर चले गए। बाद में वह एक हाथ का ब्रेक लेकर आटो रिक्शा चलाते थे, विशेष रूप से बजाज ऑटो लिमिटेड द्वारा उनके लिए फिट था। जब वह सेवा में थे तो एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस तथ्य का उल्लेख किया था कि वह रामकृष्णन की गोपनीय रिपोर्ट में शारीरिक रूप से अक्षम थे ।लेकिन तब रामकृष्णन उस समय राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने तुरंत आदेश दिया कि जिन लोगों को विकलांगता है। उन व्यक्तियों का उनकी गोपनीय रिपोर्टों में मूल्यांकन करते समय उनकी विकलांगता का मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए।

आज भी एच रामकृष्णन एक सफल पत्रकार और महान संगीतज्ञ है । आपने अपनी विकलांगता को कभी हावी होने नहीं दिया। हमेशा से संघर्ष करते रहे और सफलता के शिखर पर आज आपका नाम सफल व्यक्तियों की सूची मे आधार के साथ गिना जाता है।

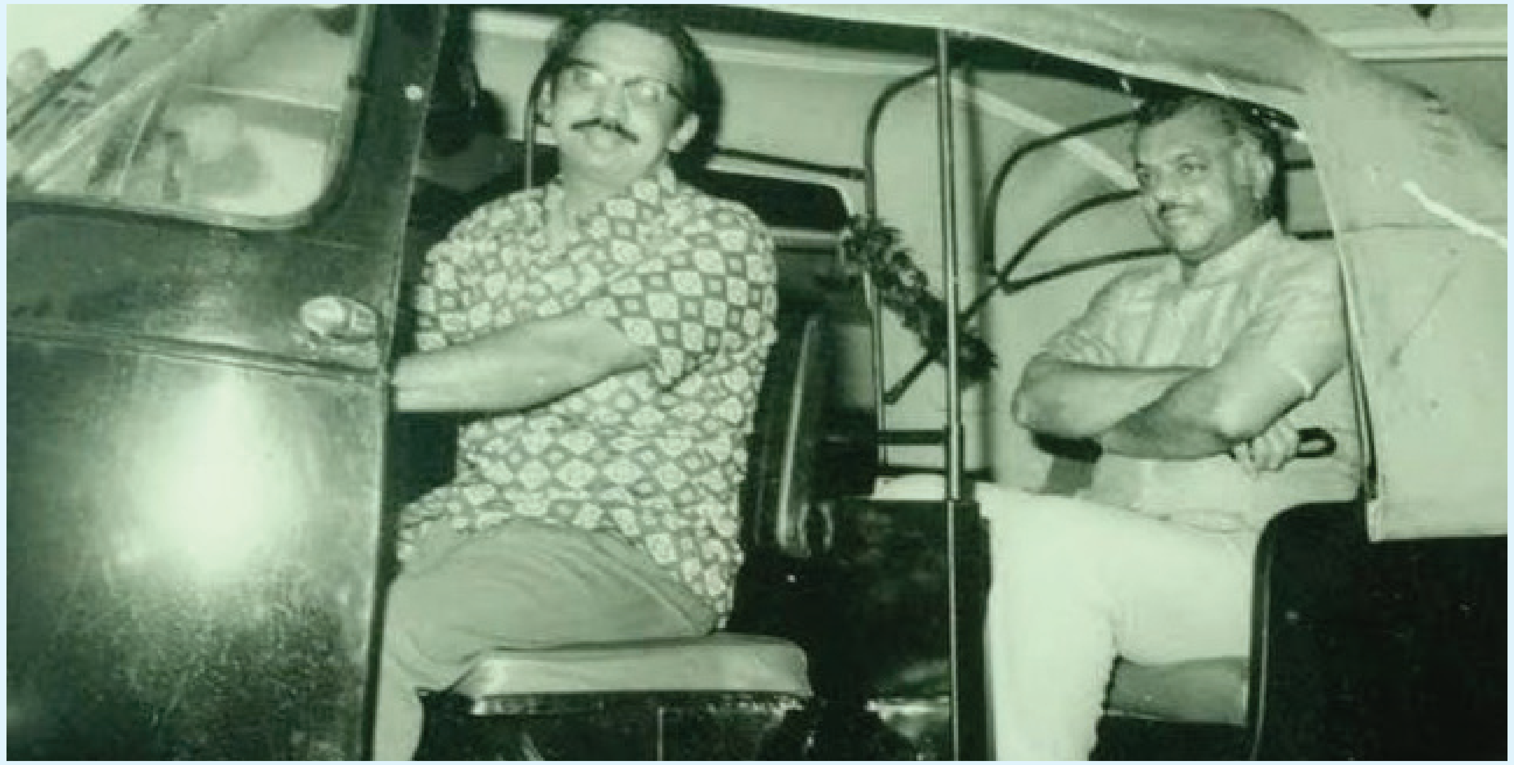

स्पेश्यल ब्रेक के साथ रिक्शा चलाते हुए एच. रामकृष्णन

इस ढ़ाई फुट के दिव्यांग का हर कोई मुरीद, इस तरह कर रहा दूसरों के घरों में उजाला

जीने का जज्बा कोई इनसे सीखे, जो दिव्यांग होने के बावजूद न सिर्फ अपने पैरों पर खड़े हुए, बल्कि समाज में एक मुकाम भी हासिल किया।

जी हां, हम बात कर रहे हैं नाहन के अमरपुर मोहल्ला के विवेक कुमार उर्फ विशु की, जो दीए बेचकर न सिर्फ अपने परिवार, बल्कि दूसरों के घरों को भी रोशन कर रहा है। वह पढ़ाई के साथ-साथ पूरे हौसले व विश्वास के साथ घर के सारे काम करता है।

विवेक के पिता अपने बेटे के आत्मविश्वास और मेहनत के कायल हैं। विवेक आजकल बड़ा चौक में दिवाली के लिए मिट्टी के दीए व अन्य सामान बनाकर बेच रहा है।

विशु का कद अढ़ाई फुट होने के बावजूद वह घबराता नहीं है। इस दिव्यांग का हौसला इतना बुलंद है कि अपने परिवार ही नहीं, बल्कि दूसरों को भी जीने की प्रेरणा दे रहा है।

माता-पिता को अपने बेटे की दिव्यांगता का दुख तो नहीं है, लेकिन उसके भविष्य की चिंता जरूर है। हालांकि, विवेक का बड़ा भाई व एक बहन पूरी तरह से सामान्य हैं। वह अपना सारा काम खुद कर लेता है। विवेक समाज के ऐसे लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है, जो अपनी दिव्यांगता के कारण अपनी जिंदगी को बोझ समझते हैं।

नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी शाला में तीन दिवसीय परिसंवाद का आयोजन

मेमनगर गाँव स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित हरीकृष्ण डाह्याभाई स्वामी- मंदबुध्धि बच्चों की शाला में तीन दिवसीय परिसंवाद रखा गया था। जिसका विषय म्यूजिक-डांस-ड्रामा था।

पहले दिन भाग लेने वाले ४० स्पेशल टीचर्स को डांस, म्यूजिक और ड्रामा के बारे में बताया गया, और ये विशिष्ट बच्चों को किस तरह उपयोगी है वो भी समझाया।

डांस थेरेपी, म्यूजिक थेरेपी बच्चों के विकास के लिए अत्यंत उपयोगी है। आज के परिसंवाद में संगीता पंचाल, मिहिर जानी, धृति जोशी, किन्तु गढ़वी, आनंद साठे और अरविंद गढ़वी ने वक्तव्य दिया।

अलग-अलग वाजिंत्र के वादन द्वारा स्पीच डेवेलपमेंट, बिहेवियर मोडीफिकेशन, कम्युनिकेशन स्किल,कोगनेटिव स्किल का विकास हो सकता है। सोलो डांस, ग्रुप डांस, मोनो एक्टिंग, सितार वादन जैसे माध्यम बच्चों के पुनर्वसन के लिए बहुत उपयोगी है। ये बच्चों को एवं जिन टीचर्स लोगों ने भाग लिया था उन्हें डांस के अलग-अलग स्टेप्स सिखाये गए। इस सरल स्टेप्स से कठिन स्टेप्स की तरफ जाना और बच्चों को डांस सिखा कर विकास हो सकता है।

**

परिसंवाद मे दूसरे दिन के वक्ता कृतिका प्रजापति, डॉ. शिवरत्नम वाया, रेखाबेन रावल, चेतन गज्जर और भाविन परमार थे जिन्होंने म्यूजिक के बारे में माहिती प्रदान की।आज एच.के कोलेज के विद्यार्थी स्पे.चाइल्ड आर्जव ने केसिओ पर अलग-अलग गीत बजाएं।नवजीवन के विद्यार्थी दीपक पंचाल के स्पे.चाइल्ड ने तबला पर एक ताल, तीन ताल और भांगरा का शिक्षकों के समक्ष वादन किया।

"ब्ल्यू रोझ" संस्था के स्पे.चाइल्ड हरशिश चेकर ने बोंगो पर,रेक्स पिंजवाला ने तबला पर और क्रिश ने शंख का वादन और गीतगान के जरिए अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। साइकोलोजिकल द्रष्टि से ये आर्ट का उपयोग म्यूजिक थेरपी व वाजिंत्रवादन द्वारा बच्चों का मानसिक विकास कैसे कर सकतें है वह निष्णातो ने प्रयोग के द्वारा उपस्थित शिक्षको को म्यूजिक, फ़िल्मी संगीत के अलावा फोक डांस, बांसुरीवादन जैसे माध्यम से बच्चों का विकास हो सकता है। सेन्सऑर्गन शरीर में है उसका उपयोग वाजिंत्र वादन के लिए उपयोगी है।संगीत एक उपचार पध्दति है, उसके सदुपयोग से काफी रोगों का निदान-उपचार हो सकता है। संगीत से प्रकृति भी वश में हो सकती है तो मेंटली चेलेंज बच्चों को भी सिखा सकतें है। हाइपर एक्टिव बच्चों को तानपूरा से शांत किया जा सकता है।कम्युनिकेशन एबिलिटी भी बढ़ती है।

**

परिसंवाद मे तीसरे दिन के वक्ता गौरांग शिंदे,अनिल मकवाणा,डॉ.संघमित्रा प्रभाकर,शिल्पा ठाकर,केतन दैया, डॉ. सुभाष आप्टे, डॉ.शिल्पा दास, संगीता पटेल और निलेश पंचाल थे। डांस और म्यूजिक के बाद आज का दिन ड्रामा पर केन्द्रित था जिसमे विकलांग बच्चों को एक्टिंग सिखाना था। शिक्षक पहले एक्टिंग करेंगे और बच्चे उसका निरिक्षण कर के उसका पुनरावर्तन करेंगे। अगर डायलॉग बच्चे न बोल पाए तो वो शिक्षक बोलेंगे और बच्चे एक्टिंग करेंगे। डांस और म्यूजिक की तरह ड्रामा बच्चों को उपयोगी है।कुछ बच्चे डांस और गीतगान नहीँ कर सकते ऐसे बच्चों को एक्टिंग सिखा के स्टेज शो करवा सकते है। नाटक के अलग अलग हावभाव डायलॉग के साथ शिक्षको के जरिए करवाया गया। हास्य,रुदन,गुस्सा और शांति जैसी विविध कला को कैसे प्रस्तुत की जाए वो निष्णात द्वारा शिक्षको को बताया गया। शिक्षको को इस परिसंवाद में काफी मज़ा आया।

मोनो एक्टिंग में बच्चों के लिए कितना समय होना चाहिए और उसकी स्क्रिप्ट कैसी होनी चाहिए।शिल्पाबेन ठाकर ने बच्चों को एकांकी और द्विअंकी कैसे सिखाया जाय वह बताया। आप्टेज़ी ने शिक्षको को कार्ड दे कर कार्ड के हिसाब से एक्टिंग की रमत करवाई। उसके बाद का सेशन संगीताबेन जो कोरियोग्राफर व फैशन डिज़ाइनर है उनके द्वारा स्पे.बच्चों को स्टेज शो के लिए कैसे तैयार किया जाए वो सिखाया।उसके बाद स्पे.बच्चों को मेडिटेशन के लिए जिल नयनभाई अध्यारु ने आँख पर पट्टी बांध कर कार्ड के रंग, आकार पहचाने और आंख बांध कर के पिआनो वादन के द्वारा लोगों को मन्त्रमुग्ध किया। कोई एक शिक्षकने एक कागज़ दिया तो वो भी उसने पढ़कर दिखाया।

सेमिनार के समापन में जिला समाज सुरक्षा कचहरी के अधिकारी जीतलबेन के द्वारा भाग लेने वाले शिक्षकों को सर्टिफिकेट भी दिए गए। अंत में संस्था के को-ऑर्डिनेटर श्री निलेशभाई पंचाल ने ओरिएन्टेशन प्रोग्राम में सब का अभिवादन किया और सेमिनार को पूर्ण जाहिर किया।

'विश्व विकलांग दिन' पर फ्रीडम डे-केर सेंटर द्वारा दिव्यांग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका संज्ञान वर्ल्ड रिकोर्ड ऑफ़ इण्डिया द्वारा लिया गया

फ्रीडम डे-केर द्वारा आयोजित दिव्यांग बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम में दीप प्रागट्य करते हुए 'दिव्यांग सेतु' से सह संपादक श्री मिहिरभाई शाह

न्यू वे एज्युकेशन एण्ड रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट

विश्व विकलांग दिन के अवसर पर धोलका के इतिहास में पहली बार दिव्यांग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसका संज्ञान वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ़ इन्डिया में हुआ और ये बात धोलका के लोगों के लिए गौरव लेने वाली है।

विश्व विकलांग दिन के अवसर पर न्यू वे एज्युकेशनल एंड रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट संचालित फ्रीडम डे केर सेंटर द्वारा ०२/१२/२०१८, रविवार के दिन शाम को ४:०० से ६:३० में सरस्वती विद्यालय में दिव्यांग सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया गया । कार्यक्रम के अध्यक्ष प.पू. महामंडलेश्वर १००८ श्री पतितपावनदास महाराज-मोटा रामजी मंदिर, नागनेश धाम धंधुका, अतिथि विशेष चिमनभाई पटेल-पीपल्स को.ओप. बेंक धोलका, नैमेशभाई गिडवानी-अहमदाबाद, श्री मिहिरभाई-ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट अहमदाबाद, श्री प्रवीणसिंह आर. गोहिल-धंधुका, भावनाबेन पंड्या-उत्थान तालीम केंद्र, श्री छोटूभाई सोनी-प्रमुख गायत्री मंदिर, श्री पावन सोलंकी-जीनियस फाउन्डेशन उपस्थित रहे और दिव्यांग बच्चों को प्रोत्साहित किया।

जहाँ समग्र गुजरात में से अमूमन १६ जितनी दिव्यांग बच्चों की संस्थाओ ने हिस्सा लिया। जिसमें मानसिक क्षति, द्रष्टि क्षति, सेलेब्रल पाल्सी, श्रवणमंद, शारीरिक अशक्त २१८ दिव्यांग बच्चों ने संस्कृत के श्लोक, डांस, गीत, फेशन शो, ड्रामा जैसी विविधताओं की स्टेज पर प्रतिभा दिखाई। संस्थाओ और बच्चों को गिफ्ट, सर्टिफिकेट और पुरस्कार दिया गया। इतने सारे लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर मिलने से "MAXIMUM SPECIAL CHILD PERFORMED ON" नाम का विश्व रिकार्ड हुआ। जिसकी टिपण्णी वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ़ इन्डिया में हुई वह धोलका की जनता के लिए गौरव लेने की बात है। वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ़ इन्डिया की टीम द्वारा फ्रीडम संस्था के प्रमुख भाविन परमार और संस्था के सदस्यों को सर्टिफिकेट,ट्रोफी और मैडल दे कर सन्मानित किया।

'दिव्यांग सेतु' से सह संपादक श्री मिहिरभाई शाह का स्वागत करते हुए फ्रीडम डे-केर सेंटर के ट्रस्टी श्री भाविनभाई परमार

दिव्यांग बच्चों कोगिफ्ट देते हुए 'दिव्यांग सेतु' से सह संपादक श्री मिहिरभाई शाह

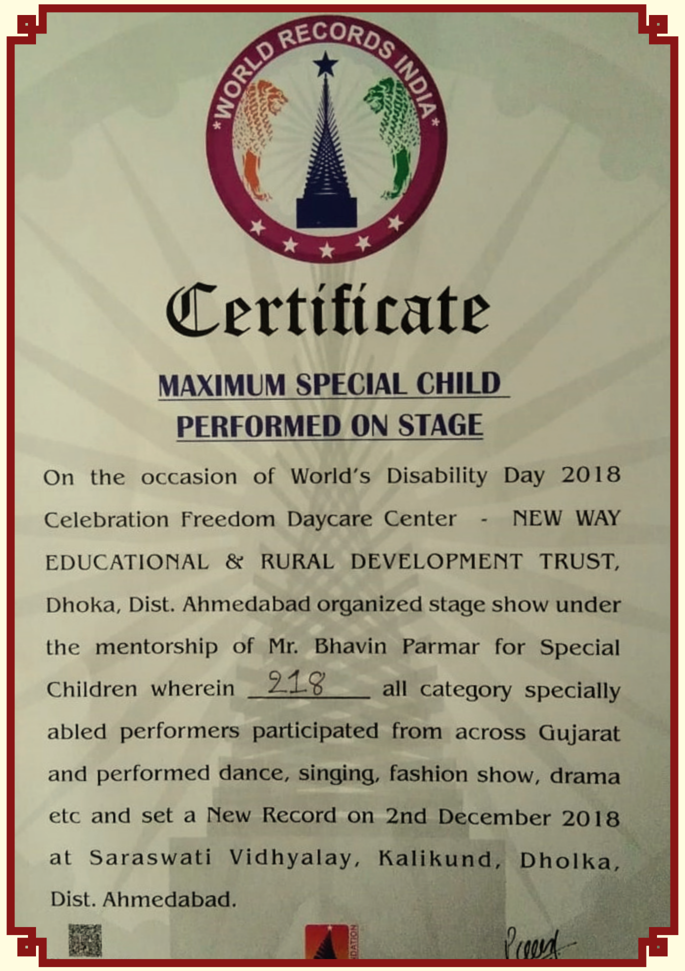

WORLD RECORDS INDIA

Certificate

MAXIMUM SPECIAL CHILD
PERFORMED ON STAGE

On the occasion of World's Disability Day 2018 Celebration Freedom Daycare Center - NEW WAY EDUCATIONAL & RURAL DEVELOPMENT TRUST, Dhoka, Dist. Ahmedabad organized stage show under the mentorship of Mr. Bhavin Parmar for Special Children wherein 218 all category specially abled performers participated from across Gujarat and performed dance, singing, fashion show, drama etc and set a New Record on 2nd December 2018 at Saraswati Vidhyalay, Kalikund, Dholka, Dist. Ahmedabad.

WORLD RECORDS INDIA
MAXIMUM DANCE FORM PERFORMED BY SPECIAL CHILD
FREEDOM DAYCARE CENTER NEW WAY EDUCATIONAL & RURAL DEVELOPMENT TRUST DHOLKA, TA. AHMEDABAD, GUJARAT
2nd December, 2018
Paavan Solanki
World Records India
www.worldrecordsindia.com

'विश्व विकलांग दिन' पर फ्रीडम डे-केर सेंटर द्वारा आयोजित दिव्यांग सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

सिकल-सेल रोग

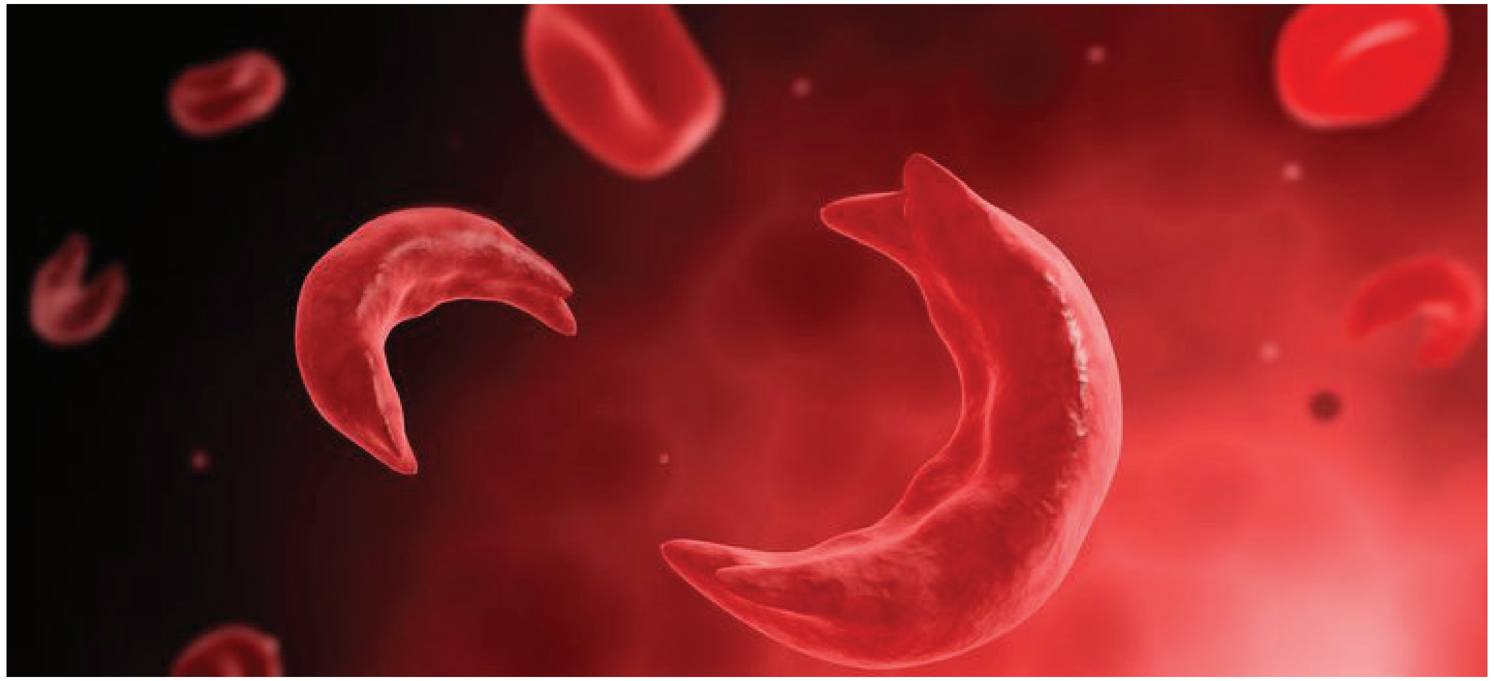

यह क्रिया कोशिकाओं के लचीलेपन को घटाती है जिससे विभिन्न जटिलताओं का जोखिम उभरता है। यह हंसिया निर्माण, हीमोग्लोबिन जीन में उत्परिवर्तन की वजह से होता है। जीवन प्रत्याशा में कमी आ जाती है, एक सर्वेक्षण के अनुसार महिलाओं की औसत जीवन प्रत्याशा 48 और पुरुषों की 42 हो जाती है।

सिकल सेल रोग, आमतौर पर बाल्यावस्था में उत्पन्न होता है और प्रायः ऐसे लोगों (या उनके वंशजों में) में पाया जाता है जो उष्णकटिबंधीय या उपोष्णकटिबंधीय भागों में पाए जाते हैं तथा जहां मलेरिया सामान्यतः पाया जाता है। अफ्रीका के उप सहारा क्षेत्र के एक तिहाई स्वदेशियों में यह पाया जाता है, क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में जहां मलेरिया आम तौर पर पाया जाता है वहां जीवन का अस्तित्व तभी संभव है जब एक सिकल-कोशिका का जीन मौजूद हो जिनके पास सिकल कोशिका रोग के दो युग्मविकल्पी में से एक ही हो वे मलेरिया के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं, क्योंकि मलेरिया प्लाज्मोडियम का पर्याक्रमण उन कोशिकाओं के हंसिया निर्माण से रुक जाता है जिस पर यह आक्रमण करता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान के अनुसार इस रोग की व्याप्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में, 5000 में लगभग 1 है, जो मुख्यतः उप सहारा अफ्रीकी वंश के अमेरिकियों को प्रभावित करता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, 500 अश्वेत जन्म में से 1 को सिकल-सेल रक्ताल्पता होती है।

जटिलताएं

सिकल सेल रक्ताल्पता विभिन्न जटिलताओं को जन्म दे सकती है जैसे:

- ओवरव्हेल्मिंग पोस्ट-(ऑटो) प्लीहा की शल्यक्रिया का संक्रमण (OPSI), जो विवृत जीवों द्वारा प्रेरित कार्यात्मक प्लीहाभाव के कारण होता है, जैसे स्ट्रेप्टोकोकस न्युमोनिया तथा हिमोफिलस इन्फ्लुएंजा . पेनिसिलिन प्रोफिलैक्सिस का दैनिक इस्तेमाल बाल्यकाल के दौरान सबसे प्रमुख उपचार है, जहां कुछ रुधिरविज्ञानी इसका सतत उपचार जारी रखते हैं। आज रोगियों को एच. इन्फ्लुएंजा, एस न्युमोनिया और नीसेरिया मेनिंगजाइटिस के नियमित टीकाकरण से भी लाभ होता है।

सिकल-सेल रोग (SCD) : ड्रीपेनोसाइटोसिस

- स्ट्रोक जो रक्त वाहिकाओं के बढ़ते संकुचन का एक परिणाम हो सकता है, मस्तिष्क तक ऑक्सीजन को पहुंचने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। मस्तिष्क रोधगलन बच्चों में होता है और वयस्कों में प्रमस्तिष्क रक्तस्राव।
- पित्तपथरी (गालस्टोन) और पित्ताशयछेदन, जो लंबे समय तक रक्त-अपघटन के कारण होने वाले अत्यधिक बिलीरुबिन उत्पादन और वर्षण से फलित हो सकता है।
- कूल्हे और अन्य प्रमुख जोड़ों का अवाहिकीय परिगलन (अपूतित अस्थि परिगलन) जो स्थानिक-अरक्तता के एक परिणाम के रूप में घटित हो सकता है।
- हाइपोस्प्लेनिज़म के कारण घटित प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया (प्लीहा की खराबी)।
- लिंग का अविरत शिश्नोत्थान और रोधगलन।

रोग निदान

HbSS में, पूर्ण रक्त गिनती हीमोग्लोबिन के स्तर को एक उच्च जाललोहितकोशिका गिनती के साथ 6-8 g/dL श्रेणी में दर्शाती है (चूंकि अस्थि मज्जा, अधिक लाल रक्त कोशिका को उत्पन्न करते हुए सिकल सेल के विनाश के लिए क्षतिपूर्ति करती है)। सिकल सेल रोग के अन्य रूपों में, Hb स्तर अधिक हो जाता है।

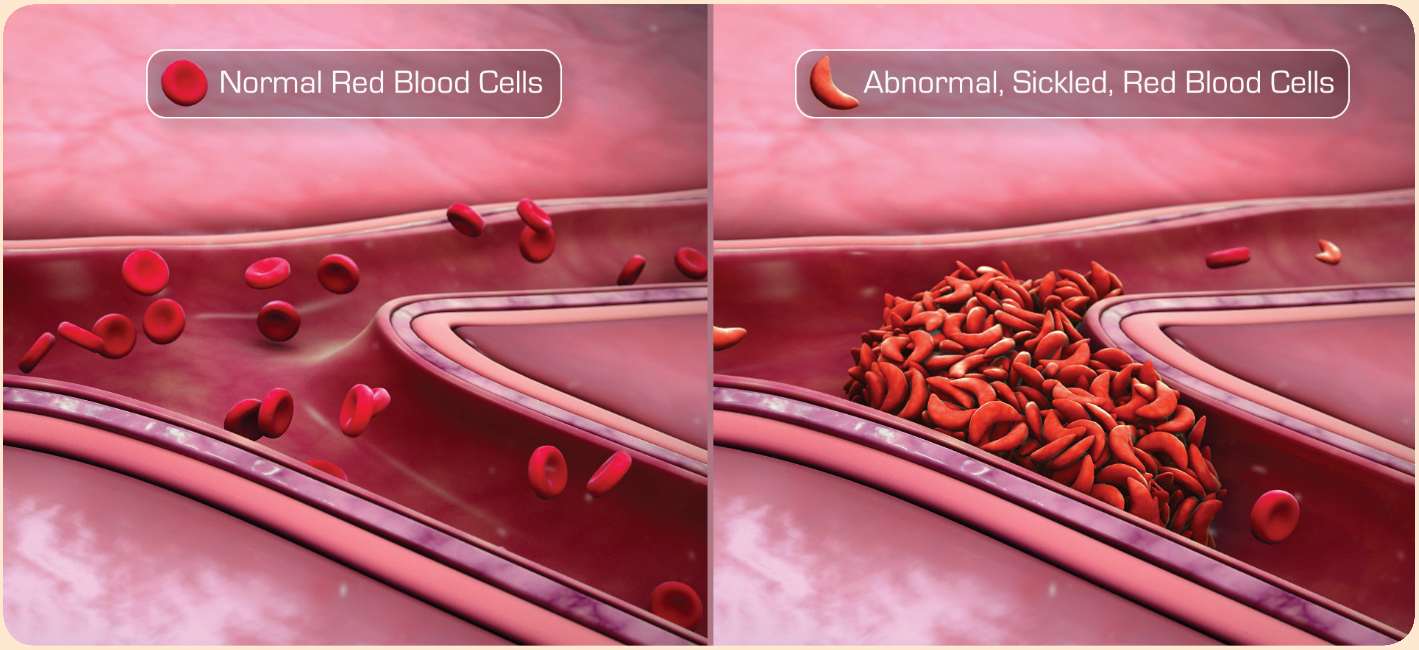लाल रक्त कोशिकाओं के हंसिया के रूप में निर्माण को, एक रक्त फिल्म पर, सोडियम मेटाबाईसल्फाईट के संयोजन द्वारा प्रेरित किया जा सकता है। सिकल हीमोग्लोबिन की उपस्थिति को “सिकल विलेयता परीक्षण” द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है। हीमोग्लोबिन S (Hb S) का मिश्रण, एक घटित घोल में जैसे (सोडिअम डाईथिओनाईट) एक गंदेला स्वरूप देता है, जबकि सामान्य Hb एक स्पष्ट घोल देता है।